www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

युग चेतना साहित्य-१३१

वृक्षों का धार्मिक महत्त्व

युग ऋषि पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

यह पुस्तिका स्वयं पढ़ें, परिवार में सबको पढ़ाएँ ।
एक सप्ताह बाद किसी अन्य पात्र व्यक्ति को दे दें ।

सौजन्य से :

0273

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

YUG NIRMAN YOJANA, GAYATRI TAPOBHUMI
MATHURA, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आत्मीय अनुरोध

परमपूज्य गुरुदेव की आकांक्षानुसार उनके उत्कृष्ट चिंतन को जन-जन तक पहुँचाने के लिए विभिन्न विषयों पर अति अल्प मूल्य वाली पुस्तकों का **युग चेतना साहित्य** प्रकाशित किया जा रहा है । न्यूनतम १०० पुस्तिका मँगाने के लिए डाकखर्च सहित कुल २२५) रुपया भेजना चाहिए । शक्तिपीठें एक साथ अधिक साहित्य मँगाकर स्थानीय कार्यकर्ताओं को उपलब्ध करा सकती हैं । उदार दानी भामाशाहों को अपने धन का सदुपयोग ज्ञानयज्ञ में करके पुस्तिकाएँ समाज में वितरित करनी चाहिए । इसी प्रकार के क्रांतिकारी चिंतन की पाठ्यसामग्री के स्वाध्याय हेतु 'युग निर्माण योजना' मासिक पत्रिका (वार्षिक शुल्क ३०) रुपया) के सदस्य बनें ।

-लीलापत शर्मा
व्यवस्थापक
युग निर्माण योजना, मथुरा

मूल्य : ३० पैसे

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वृक्षों का धार्मिक महत्त्व

सघन वनों के हरीतिमापूर्ण वातावरण में भारतीय संस्कृति का अभ्युदय और विकास हुआ है । हमारी संस्कृति के सजीव केंद्र तप स्थल और आश्रम, वन प्रांतों के अंतराल में स्थित थे । वृक्ष और वन जन–जीवन के प्राण स्रोत बने रहे हैं ।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

भारतीय संस्कृति की उदारता की सीमा नहीं है । वृक्षों तक को हमारी सहानुभूति, प्रेम, आदर प्राप्त हैं । हम वृक्षों में चेतनता को मानते हैं, सुख–दुःख के अनुभव की शक्ति में विश्वास करते हैं । वृक्षों की चेतनता का अनेक स्थानों पर वर्णन आया है । मनुस्मृति में एक–दो स्थानों पर वृक्षों की योनि मिलना पूर्व जन्म के कारण मानी गई है और

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
इन्हें जीवित एवं दुःख–सुख का अनुभव करने वाला माना गया है । सर जगदीशचंद्र वसु ने अब सिद्ध करके भी प्रत्यक्ष दिखा दिया है कि मनुष्य की तरह सुख, दुःख, मृत्यु, शोक, हर्ष इत्यादि सबका प्रभाव वृक्षों पर पड़ता है ।

वृक्ष मानव मात्र के सेवक हैं । पग–पग पर सहायता करने वाले और मानव जीवन को ऊँचा उठाने वाले हैं । औषधि के रूप में तो उनके ऋण से मनुष्य, पशु कोई भी उऋण नहीं हो सकता । भोजन, छाया, लकड़ी, बहुमूल्य रासायनिक तत्त्व सभी का लाभ हमें वृक्षों से प्राप्त होता है । अतः हमारे यहाँ हिंदू जाति के आचार–विचार वैज्ञानिक तत्त्वों से ओत–प्रोत हैं । विशेष रूप से वृक्ष–पूजन विज्ञान तो सूक्ष्म अनुसंधान चाहता है ।

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यों तो सभी वृक्ष लाभ के हैं, पर बड़, नीम, पीपल, तुलसी, आँवला के वृक्ष रासायनिक दृष्टि से बड़े ही उपयोगी हैं । इसलिए इनकी पूजा को भारत में सम्मिलित कर लिया गया है । तुलसी का पौधा घर में लगाना और नित्य प्रातः उसका पूजन करना तथा उसमें जल देना, भारतीय नारियों का एक धार्मिक कृत्य रहा है । वैज्ञानिकों ने स्वीकार किया है कि तुलसी के संसर्ग से वायु शुद्ध रहती है, मलेरिया परजीवी आदि विषैले कृमियों का नाश होता है । ज्वर में तो तुलसी अमृत–तुल्य है । मरण के समय तुलसी मिश्रित गंगाजल पिलाया जाता है । इससे आत्मा पवित्र होती है । तुलसी का दर्शन तक सभी शक्तियों को बढ़ाने वाला है । शरीर में संचित मल दूर हो जाते हैं । दूषित जल के शोधन में

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
तुलसी पत्र डाले जाते हैं ।

इसी प्रकार देव मंदिरों में पीपल रखने और उसे पूजने का विधान है । नारियाँ पीपल पर जल चढ़ाती और पुण्य प्राप्त करती हैं । पीपल के फलों में रासायनिक तत्त्व भरे हुए हैं । इसका चूर्ण पौष्टिक होता है । पीपल की जटा में बंध्यत्वनाशक विशेष गुण होता है । पीपल के पात्र में दूध पीने से गंधक के पात्र की भाँति बिना ही टॉनिक दवाई पिए पुष्टि होती है । हिंदू महिलाओं का यह विश्वास है कि निरंतर पीपल की पूजा करने से पुत्रोत्पत्ति होती है ।

इसी प्रकार पलाश, आँवला और बड़ भी बड़े उपयोगी वृक्ष हैं । इनमें जीवनी–शक्ति बढ़ाने के अनेक तत्त्व विद्यमान हैं । यही कारण है कि इनके उपयोग को दृष्टि में

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
रखकर इन्हें धर्म में स्थान दे दिया गया है । भगवद्गीता में पीपल को तो भगवान् का स्वरूप कहा गया है ।

हमारे धर्म और संस्कृति में जो स्थान विद्यालय, ब्रह्मचर्य, ब्राह्मणत्व, गऊ, देव, मंदिर, गंगा, गायत्री एवं गीता–रामायण आदि धर्म ग्रंथों में दिया गया है, वैसा ही वृक्षों को भी महत्त्व दिया गया है । यह महत्त्व उन्हें उनके द्वारा प्राप्त होने वाले लाभों को देखते हुए ही दिया गया है ।

शास्त्रकार ने लिखा है–

रविश्चन्द्रो द्या वृक्षा नद्योगावश्च सज्जनाः ।
ऐसे परोपेकाराय युगे दैवेन निर्मिताः ॥

परमपिता परमात्मा ने सूर्य, चंद्रमा, बादल, वृक्ष, नदियों, गायों और सज्जन पुरुषों का आविर्भाव संसार में परोपकार के लिए किया

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
है । ये सब सदैव परोपकार में ही रत रहते हैं ।

उपरोक्त उक्ति में ऋषि ने अन्य परोपकारियों के साथ में वृक्ष को भी समान दर्जा दिया है और यह स्पष्ट किया है कि एक सज्जन पुरुष और वृक्ष में गुणों की दृष्टि से कोई भेद नहीं है । जिस प्रकार सज्जन व्यक्ति समाज के हित और कल्याण में तत्पर रहते हैं, वृक्ष भी उसी तरह **''परोपकाराय इदं शरीरं''** का लक्ष्य बनाकर प्राणिमात्र के हित में अपने आपको तिल–तिल कर उत्सर्ग करते रहते हैं ।

अश्वत्थः सर्ववृक्षाणि देवर्षीणं नारदः ।
गन्धर्वाणां चित्ररथः सिद्धानां कपिलोमुनिः ॥

अर्थात्–हे धनञ्जय ! संपूर्ण वृक्षों में मैं पीपल वृक्ष हूँ, देव ऋषियों में नारद, गंधर्वों में

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
चित्ररथ तथा सिद्धों में कपिल मुनि मैं ही हूँ ।

उपरोक्त कथन में जहाँ भगवान् कृष्ण ने आपको पीपल के वृक्ष में समाहित घोषित किया है, वहाँ उनके कथन से यह भी सिद्ध हो जाता है कि वृक्ष देव ऋषियों, सिद्धों और गंधर्वों के समकक्ष प्रतिष्ठित होते हैं । देवताओं के समाज में इनकी श्रेणी छोटी नहीं है । संसार में यदि कल्याणकारी, परोपकारी, समदर्शी, फलदायी और वरदायी व्यक्तियों में देवों या गंधर्वों को प्रतिष्ठा दी जाए, तो वृक्ष भी उससे कम सम्मान के पात्र नहीं हैं ।

संभवतः इन्हीं बातों पर पूरी तरह विचार करने के बाद भारतीय आचार्यों ने वृक्षारोपण और वृक्ष की प्रतिष्ठा को महान् पुण्य माना है और उनसे अनेक प्रकार के वरदान मिलने की बात कही है । धर्म ग्रंथों में ऐसे अनेक

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
उदाहरण विद्यमान हैं । विष्णु स्मृति के ''**कूपतडागखननं सदुत्सर्ग**'' विधान में बतलाया है कि **जो मनुष्य वृक्षों का आरोपण करता है, ये वृक्ष परलोक में उसके पुत्र होकर जन्म लेते हैं ।** वृक्षों का दान करने वाला, वृक्षों के पुष्पों द्वारा देवताओं को प्रसन्न करता है और मेघ के बरसने पर छाता के द्वारा अभ्यागतों को तथा जल से पितरों को प्रसन्न करता है । पुष्पों का दान करने से समृद्धिशाली होता है । कुआँ, उद्यान, तालाब और देवायतन का पुनः संस्कार अर्थात् जीर्णोद्धार कराने वाला व्यक्ति मौलिक फल प्राप्त किया करता है अर्थात् उनके नूतन निर्माण कराने के समय ही पुण्य फल पाता है ।

उसके विपरीत जो वृक्षों को नष्ट करते या काटते हैं, उनकी निंदा भर्त्सना की गई है ।

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ऋग्वेद में ऋषि ने कहा है—''**जिस प्रकार दुष्ट बाज पक्षी दूसरे पखेरुओं की गर्दन मरोड़ कर उन्हें दुःख देता और मार डालता है, तुम वैसे न बनो और इन वृक्षों को दुःख न दो, इनका उच्छेदन न करो, ये पशु-पक्षियों और जीव-जंतुओं को शरण देते हैं।**''

हम उन ऋषियों के आदेशों का पालन करते रहे हैं। भले ही उनके सूक्ष्मातिसूक्ष्म भावों को न जान पाए हों, पर उन आज्ञाओं का पालन करने से उन लाभों से तो लाभान्वित रहे ही हैं। हमारे देश में जब से उन आदेशों पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया तभी से भारतीय जीवन में मलीनता का प्रवेश हुआ है। वृक्षों के प्रति अवहेलना भी उनमें से एक महत्त्वपूर्ण कारण है। तुलसीदास जी ने रामराज्य के सुखों का

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
वर्णन करते हुए लिखा है–

फूलहिं फलहिं सदा तरु कानन ।
रहहिं एक संग गज पंजानन ॥
लता विटप माँगें मधु जबही ।
मन भावती धेनु पय स्रवही ॥

अर्थात्–उस समय जंगल में वृक्ष खूब फलते थे । वृक्ष और लताएँ मनोवांछित फल देते थे । गाएँ दूध देती थीं ।

यह स्थिति तब रही होगी, जब वृक्षों के प्रति प्रजा में आदर का भाव रहा होगा । उस समय की प्रकृति भी संतुलित थी । समय पर वर्षा होती थी । नदियाँ बराबर बहती रहती थीं । समुद्र अपनी मर्यादा में रहता था । इन सब सुविधाओं के पीछे वृक्षों एवं वनस्पतियों का बड़ा हाथ था और हमें इसका अनायास ही लाभ इसलिए मिल जाता था कि हम उन

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आदेशों का भलीभाँति पालन करते थे, जो मानवीय जीवन की सुव्यवस्था के लिए उपयोगी और आवश्यक थे । अब जबकि इन आज्ञाओं की अवज्ञा ही हो रही है, तो उसके सामूहिक दुष्परिणाम भी हमारे सामने हैं । हमारे जीवन का हर क्षेत्र कष्ट और कठिनाइयों से घिरा हुआ है ।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

कितना सुहावना और मनोहारी वातावरण रहा होगा, जब भारत की भूमि के ५० प्रतिशत से भी अधिक क्षेत्रफल पर वृक्ष लगे होंगे । शीतल, सुगंधित, मंद-मंद मनभावन वायु चलती होगी । घर-घर यज्ञ की सुगंध वातावरण में फैली होगी । उस समय यह देवभूमि निश्चित ही शस्य श्यामला रही होगी और देवताओं के लिए भी आकर्षण का केंद्र रही होगी । आज यदि इतना न भी हो

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सके, तो स्वच्छ वायु में श्वाँस लेने के लिए तथा बाढ़, सूखा, भूस्खलन, भूकंप जैसी विपदाओं से रक्षा के लिए कम से कम ३३ प्रतिशत भूमि पर वृक्षों का होना तो अनिवार्य ही है । इसकी पूर्ति के लिए सरकारी प्रयासों पर निर्भर रहने से काम नहीं चलेगा । प्रत्येक व्यक्ति के जिम्मे १२ वृक्ष आते हैं । प्रत्येक व्यक्ति को १२ वृक्ष लगाकर उनकी देखभाल एवं परवरिश करने का दायित्व उठाना ही चाहिए । वृक्षों की रक्षा का प्रयास करना चाहिए ।

आशा है आपको यह पुस्तिका अच्छी लगी होगी । इस पुस्तिका को एक सप्ताह से अधिक अपने पास रखना ज्ञानयज्ञ में विघ्न डालना है । आप भी कुछ पुस्तकें समाज में वितरित करें ।

मुद्रक : युग निर्माण प्रेस, मथुरा

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ज्ञानयज्ञ की क्रांतिकारी योजनाएँ

(१) **श्रीराम झोला पुस्तकालय**–समयदान के अंतर्गत परिजन नित्यप्रति न्यूनतम एक घर में साहित्य बदलने का कार्य करें । पूज्यवर के चिंतन को घर–घर पहुँचाएँ ।

(२) **माता भगवती स्वचालित पुस्तकालय**–नियमित दैनिक अंशदान (न्यूनतम ५० पैसा प्रतिदिन) ज्ञानयज्ञ के लिए निकालकर १५) रुपए की युग चेतना साहित्य की ५० पॉकेट बुक्स प्रतिमाह पढ़ने के लिए बाँटें ।

(३) **गायत्री ज्ञानयज्ञ योजना**–पुरानी पुस्तकें एवं पत्रिकाएँ गायत्री ज्ञानयज्ञ योजना की स्लिप लगाकर समाज में वितरित कर दें । स्लिप गायत्री तपोभूमि, मथुरा से मँगा सकते हैं ।

(४) **युग चेतना साहित्य वितरण योजना**--३० पैसा मूल्य वाली १६ पेजी पॉकेट बुक्स न्यूनतम ९०० मँगाने के लिए डाकखर्च सहित कुल २२५) रुपया भेजकर मँगाएँ और वितरित करें ।

संपर्क सूत्र–**विचार क्रांति अभियान**
युग निर्माण योजना, मथुरा–२८१००३

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

युग ऋषि चिंतन

विचारों की विचारों से काट, आस्थाओं का परिष्कार और उल्टे को उलट कर सीधा करना ही विचार क्रांति का लक्ष्य है । सद्ज्ञान का आलोक नासमझी के अंधकार को मिटाने का कार्य संपादित करे । हमारे विचार बड़े पैने हैं, तीखे हैं । दुनिया को पलटने का जो दावा हम करते हैं, वह सिद्धियों से नहीं, अपने सशक्त विचारों से करते हैं । आप इन विचारों को फलाने में हमारी सहायता कीजिए ।

-पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

अधिक जानकारी के लिए पढ़ें : वृक्षारोपण एक परम पुनीत पुण्य-२), तुलसी के चमत्कारी गुण-३), स्वास्थ्य रक्षा प्रकृति के अनुसरण से संभव-६), युग ऋषि का अध्यात्म युग ऋषि की वाणी में-७)५०, विकृत चिंतन रोग-शोक का मूलभूत कारण-६) ।

पुस्तक सूची के लिए निम्न पते पर लिखें ।

युग निर्माण योजना

गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

फोन : (०५६५) ४०४०००, ४०४०१५

Free Download Life Chaning Books, Articles, Stories Poems, Great Personalities & Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org